Twitter Inc.
Social network company

Nirmala Sitharaman
@nsitharaman

Raksha Mantri/Minister of Defence, formerly Min of Commerce & Industry, MP (RS) representing Karnataka,Views personal, RTs no endorsement.

Nirmala Sitharaman
@nsitharaman
Follow

1. To all men, officers & the DG Border Roads Organisation congratulations & well done on Project Hirak. #BRO is engaged in the construction of Kailash Mansarovar Yatra route. Portion between Tawaghat-Lipulekh pass via Ghatiabagarh is an important constituent. @DefenceMinIndia

7:30 PM - 15 Jan 2019

Nirmala Sitharaman
@nsitharaman
Follow

2. A very crucial milestone has been achieved on 15 Jan 2019 by connecting Lakhanpur to Najang by BRO. This connectivity is in Dharchula Sub- Division of Uttarakhand, where the only alternative route was a mule track passing below the new road alignment. #BRO

7:36 PM - 15 Jan 2019

Nirmala Sitharaman
@nsitharaman
Follow

3. This road connectivity to Najang will ensure access to people in Malpa, Lamari, Buddhi, Chiyalekh, Garbhadhar, Gunji, Kutti & Nabhidang villages in Dist Pithoragarh, Uttarakhand. This will provide round the clock connectivity to our troops in Vyas valley. #BRO

7:36 PM - 15 Jan 2019

Press Information Bureau
Government of India

Ministry of Defence

Work in Full Swing on Kailash-Mansarovar Yatra Stretch in Uttarakhand

Posted On: 16 JAN 2019 6:37PM by PIB Delhi

Border Roads Organisation (BRO) is engaged in construction of Tawaghat-Ghatiabagarh-Lipulekh axis in Uttarakhand that forms important part of Kailash-Mansarovar Yatra route. The road upto Lakhanpur from Tawaghat measuring 23 kilometres has already been connected. Similarly, the road beyond Budhi village upto Lipulekh pass is 51 kilometres long has also been connected. At present, BRO under project Hirak is engaged in constructing road between Lakhanpur to Budhi in 16.5 kilometres length, which passes through rugged and inaccessible terrain.

Chief Engineer, Project Hirak, Shri Vimal Goswami has confirmed that BRO has connected Lakhanpur to Najang on 15 January 2019. This stretch is of 2.5 kilometres length and BRO has been able to connect Najang to mainland despite all odds. This has been possible due to unconditional support from the district administration, State Government and local Army formations. This portion of road assumes prime significance since the road alignment intersects the mule track and it has been a main issue of concern for the State Government in order to provide passage to locals residing in upper reaches, traders and migrants. Now, the construction work beyond Najang can continue uninterrupted without causing any difficulty to locals for their movements to Gunji & beyond, since the Mule track at Najang bifurcates to the left side while the road alignment traverses towards right side to Malpa, Lamari, Chankan villages enroute to Budhi village.

The connectivity between Lakhanpur to Najang has been very challenging & difficult and heavy machines were inducted through riverbed to various attack point by taking them further up from riverbed below the proposed road level. There were four attack points created between Lakhanpur & Najang and the work was going on simultaneously on every point interspersed with virgin hilly terrain. The maintenance of logistic and supply line to each attack point alongside the induction of working force at each point has been very challenging but it has been made possible by the troops of 67 RCC and 765 BRTF engaged in the construction work so as to achieve this feat.

Director General Border Roads (DGBR) Lt Gen Harpal Singh is confident that BRO shall be able to connect the complete stretch from Najang to Budhi as per planned timelines. The General officer said that the team of officers and staff engaged in construction of this prestigious project are very enthusiastic and full of zeal who will deliver this prestigious project to nation in a time bound manner.

अमर उजाला
Pithoragarh
17 January 2019

उपलब्धि

लखनपुर में कठोर चट्टानों का सीना चीर वाहनों से नजंग तक पहुंचे ग्रिफ के अधिकारी

चीन सीमा की ओर नजंग तक पहुंचा दी सड़क

धारचूला (पिथौरागढ़)। कठोर चट्टानों का सीना चीर सीमा सड़क संगठन ने चीन सीमा तक रोड बनाने की सबसे बड़ी बाधा पार कर ली है। लखनपुर और नजंग के बीच 2.5 किलोमीटर सड़क काटने का चुनौतीपूर्ण काम पूरा होते ही तवाघाट से नजंग तक 26 किलोमीटर लंबी सड़क कटिंग संपन्न हो गई है। बुधवार को सीमा सड़क संगठन के अधिकारी वाहनों से नजंग पहुंच गए।

अब नजंग से बूंदी तक 14 किलोमीटर सड़क और कटनी है। इसके बाद चीन सीमा पर लीपूपास से चार किमी पहले तक सड़क संपर्क बन जाएगा। चीन सीमा की ओर से बूंदी तक 51 किमी सड़क का निर्माण पहले ही पूरा किया जा चुका है। कैलास मानसरोवर यात्रा मार्ग पर तवाघाट से लीपूलेख तक 95 किमी लंबी सड़क का निर्माण कार्य सीमा सड़क संगठन की हीरक परियोजना के अधीन चल रहा है। कठोर चट्टानों के कारण लखनपुर से नजंग के बीच 2.5 किमी सड़क की कटिंग चुनौती बनी हुई थी। सीमा सड़क संगठन के मुख्य अभियंता विमल गोस्वामी ने बताया कि घटियाबगड़ से नजंग तक सड़क का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है। नजंग में उनके वाहन पहुंच गए हैं। अब सीमांत के बूंदी, छियालेख, गर्ब्यांग, गुंजी, कालापानी और नाभीढांग के ग्रामीणों को आवागमन में सुविधा मिल सकेगी। कैलाश-मानसरोवर यात्रा, भारत-तिब्बत स्थल व्यापार को बढ़ावा मिल सकेगा। यदि सब कुछ अनुकूल रहा तो सड़क को 2020 तक पूरा कर लिया जाएगा। हालांकि, उन्होंने ये भी कहा कि एनएच के मानकों के अनुसार सड़क को सभी तरह के वाहनों के लिए जनता को उपलब्ध कराने में कुछ समय लगेगा। ब्यूरो

>> नजंग तक यातायात सुविधा मिलने में अभी लगेगा समय : पेज 3 पर

धारचूला के नजंग पहुंचे सीमा सड़क संगठन के वाहन।

सीमा तक पहुंचने के लिए 14 किमी सड़क बननी शेष

मुख्य अभियंता बोले 2020 तक बन जाएगी सड़क

अभियंता समेत नौ लोगों को खोना पड़ा

लखनपुर और नजंग की पहाड़ियों को काटने में पिछले दस सालों में ग्रिफ के एक जूनियर इंजीनियर, दो आपरेटर और छह स्थानीय मजदूरों को अपनी जान गंवानी पड़ी। करोड़ों की मशीनें भी इन्हीं चट्टानों में दफन हो गईं थी। ग्रिफ के चीफ इंजीनियर विमल गोस्वामी ने बताया कि सड़क निर्माण के दौरान 65 लाख की लागत का डोजर, 2.5 करोड़ रुपये की डीसी 400 ड्रिलिंग मशीन, 40 लाख रुपये की वेगन डील मशीन सहित कई मशीनें नष्ट हो गई थीं।

नजंग तक यातायात सुविधा मिलने में अभी लगेगा समय

अमर उजाला ब्यूरो

धारचूला। नजंग तक सड़क कटिंग का काम पूरा होने के साथ ही भले ही वहां तक ग्रिफ वाहन ले जाने में सफल रहा है लेकिन लोगों को इस सड़क पर यातायात सुविधा मिलने में अभी वक्त लगेगा। ग्रिफ के चीफ इंजीनियर विमल गोस्वामी के अनुसार एनएच के सड़क के मानकों के अनुसार मार्ग को सभी प्रकार के वाहनों और जनता के लिए उपलब्ध कराने में कुछ समय लगेगा।

उन्होंने बताया कि सड़क पास होने के बाद व्यापारी बिना किसी असुविधा के नजंग तक आवागमन कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि कुटी गांव को पहले ही गुंजी से सड़क मार्ग से जोड़ दिया गया है। पत्रकार वार्ता में उन्होंने बताया कि अभी तक नजंग का मार्ग 2.5 टन के वाहन के लिए उपयुक्त है। उन्होंने इस कठिन कार्य में सहयोग के लिए स्थानीय प्रशासन, आईटीबीपी और सेना सहित स्थानीय लोगों का आभार जताया। सामरिक महत्व की इस सड़क के बनने के बाद कैलाश मानसरोवर की यात्रा भी सुगम हो जाएगी। इस अवसर पर मेजर मोहित कतना, कर्नल सौमेंद्रा बनर्जी, ले.जनरल हरपाल सिंह आदि मौजूद थे।

सीमा के लिए बन रही सड़क की वर्तमान स्थिति

तवाघाट से चीन सीमा तक कुल 95 किलोमीटर लंबी सड़क का निर्माण किया जाना है। तवाघाट से घटियाबगड़-नजंग तक 26 किलोमीटर सड़क का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। नजंग से मालपा और लामारी होते हुए बूंदी तक 14 किलोमीटर सड़क की कटिंग का कार्य किया जाना है। उधर चीन सीमा की ओर से बूंदी गांव तक 51 किलोमीटर सड़क की कटिंग का कार्य पूर्व में किया जा चुका है। लीपूपास सीमा की ओर लगभग चार किमी सड़क का निर्माण सुरक्षा की दृष्टि से अभी नहीं किया गया है। अनुमति मिलने के बाद यह सड़क काटी जाएगी।

ये है लीपूलेख और कैलाश मानसरोवर यात्रा का रूट

तवाघाट, घटियाबगड़, नजंग, मालपा, लामारी, बूंदी, छियालेख, गर्ब्यांग, नपलच्यु, गुंजी, कालापानी, नाभीढांग, लीपूलेख।

लोगों ने कहा, सड़क निर्माण से मिलेगी सुविधा

धारचूला। भारत चीन व्यापार समिति के अध्यक्ष जीवन सिंह रौकली का कहना है कि ग्रिफ द्वारा नजंग तक सड़क जोड़ देने से सभी व्यापारियों को भारत-चीन व्यापार में सामान लाने ले जाने में बड़ी राहत मिलेगी। रं कल्याण संस्था के धारचूला ईकाई के संरक्षक अशोक नबियाल एवं अध्यक्ष कृष्णा गर्ब्याल ने कहा कि नजंग तक सड़क जुड़ने से माइग्रेशन के समय व्यास घाटी के सात गांव बूंदी, गर्ब्यांग, नपलच्यु, गुंजी, नाभी, रौंकांग और कुटी के साथ मित्र राष्ट्र नेपाल के दो गांव छांगरु व तिंकर के लोगों को दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही कैलाश मानसरोवर, आदि कैलाश, ओम पर्वत के यात्रियों के साथ आईटीबीपी, सेना एवं एसएसबी के जवानों को भी राहत मिलेगी। ब्यूरो

धारचूला में लखनपुर की कठिन चट्टान को काटती पोकलैंड मशीन। (संवाद फोटो)

THE TIMES OF INDIA

BRO constructs 2.5-kilometre-long Lakhanpur-Najang high altitude road on Indo-Nepal border

Jan 16, 2019

Dehradun: The Border Road Organisation (BRO) accomplished one of the rare feats by completing a crucial 2.5 km long stretch connecting Lakhanpur to Najang, which lies at the Kailash Mansarover route near Lipulekh pass on international borer along Nepal in Pithoragarh district.

The stretch is part of the Kailash-Mansarovar Yatra circuit, which the BRO is planning to complete it by December, 2020.

The stretch, which is over 2400 metres in height, is considered to be one of the most difficult projects to complete.

It took 10 years to construct the stretch, and BRO engineers have admitted that the narrow track and terrain acted as the biggest challenges to construct the road.

Acknowledging the achievement, Defence minister, Nirmala Sitharaman tweeted that the road connectivity to Najang will ensure accesses to people of Malpa, Lamari, Buddhi, Chiyalekh, Garbhadhar, and Nabhidang in Pithoragarh district.

““To all men, officers & the DG Border Roads Organisation congratulations & well done on Project Hirak. #BRO is engaged in the construction of Kailash Mansarovar Yatra route. Portion between Tawaghat-Lipulekh pass via Ghatiabagarh is an important constituent,” she tweeted.

“A very crucial milestone has been achieved on 15 Jan 2019 by connecting Lakhanpur to Najang by BRO. This connectivity is in Dharchula Sub- Division of Uttarakhand, where the only alternative route was a mule track passing below the new road alignment,” she said.

“This will provide round-the-clock connectivity to our troops in Vyas valley,” the tweet added.

A senior official in the BRO said that for Army to reach Najang area before the project commenced was nothing short of a ‘logistic nightmare’, as the route from the India side was inaccessible and taking the Nepal route was not feasible.

“It used to take five hours for a porter to reach Najang using the bridges at the border, but now it is only a five-minute drive to Najang. For our Army personnel, it is very important,” the official said.

The Lakhanpur-Najang stretch is the lifeline of the entire region since it falls on the Mansarovar Yatra route.

“The difficulty the project has been can be gauged from the fact that machines worth Rs 3 crore were damaged due to the terrain and ten labour causalities were recorded,” the BRO officer said.

Business Standard

BRO connects crucial road links on Kailash Mansarovar route

January 16, 2019

The BRO, which is constructing the Tawaghat-Ghatiabagarh-Lipulekh axis in Uttarakhand, an important part of the Kailash-Mansarovar Yatra route, has connected Lakhanpur to Najang, Defence Ministry officials said.

The crucial development will also provide round-the-clock connectivity to troops deployed in Vyas valley, a ministry official said.

A Defence Ministry statement said the road upto Lakhanpur from Tawaghat measuring 23 km has already been connected.

Similarly, the road beyond Budhi village upto Lipulekh pass is 51 km long has also been connected.

At present, the Border Roads Organisation, under project Hirak, is engaged in constructing a road between Lakhanpur to Budhi in a 16.5 km-stretch, which passes through a rugged and inaccessible terrain.

"Chief Engineer, Project Hirak, Vimal Goswami has confirmed that the BRO has connected Lakhanpur to Najang on January 15. This stretch is of 2.5 km length and the BRO has been able to connect Najang to the mainland despite all odds," the statement said.

This portion of road assumes prime significance since the road alignment intersects a mule track and it has been a main issue of concern for the state government in order to provide passage to locals residing in upper reaches, traders and migrants.

"This connectivity is very important, being chicken neck corridor with Nepal in Dharchula sub-division, where the only alternative route was a mule track passing below the new road alignment," it said.

"The road connectivity to Najang will ensure unhindered access to civil population residing in Malpa, Lamari, Buddhi, Chiyalekh, Garbhadhar, Gunji, Kutti and Nabhidang villages in Pithoragarh district of Uttarakhand," the statement said.

BRO constructs 25kilometrelong LakhanpurNajang high altitude road on Indo Nepal border

#BRO is engaged in the construction of Kailash Mansarovar Yatra route. Portion between Tawaghat-Lipulekh pass via Ghatiabagarh is an important constituent," she tweeted."A very crucial milestone has been achieved on 15 Jan 2019 by connecting Lakhanpur to Najang by BRO. For our Army personnel, it is very important," the official said.The Lakhanpur-Najang stretch is the lifeline of the entire region since it falls on the Mansarovar Yatra route."The difficulty the project has been can be gauged from the fact that machines worth Rs 3 crore were damaged due to the terrain and ten labour causalities were recorded," the BRO officer said. This connectivity is in Dharchula Sub- Division of Uttarakhand, where the only alternative route was a mule track passing below the new road alignment," she said."This will provide round-the-clock connectivity to our troops in Vyas valley," the tweet added.A senior official in the BRO said that for Army to reach Najang area before the project commenced was nothing short of a 'logistic nightmare', as the route from the India side was inaccessible and taking the Nepal route was not feasible."It used to take five hours for a porter to reach Najang using the bridges at the border, but now it is only a five-minute drive to Najang. Dehradun: The Border Road Organisation (BRO) accomplished one of the rare feats by completing a crucial 2.5 km long stretch connecting Lakhanpur to Najang, which lies at the Kailash Mansarover route near Lipulekh pass on international borer along Nepal in Pithoragarh district.The stretch is part of the Kailash-Mansarovar Yatra circuit, which the BRO is planning to complete it by December, 2020.The stretch, which is over 2400 metres in height, is considered to be one of the most difficult projects to complete.It took 10 years to construct the stretch, and BRO engineers have admitted that the narrow track and terrain acted as the biggest challenges to construct the road.Acknowledging the achievement, Defence minister, Nirmala Sitharaman tweeted that the road connectivity to Najang will ensure accesses to people of Malpa, Lamari, Buddhi, Chiyalekh, Garbhadhar, and Nabhidang in Pithoragarh district.""To all men, officers & the DG Border Roads Organisation congratulations & well done on Project Hirak.

Sitharaman praises BRO personnel for constructing key part of Kailash Mansarovar route

ANI | Updated: Jan 16, 2019 22:13 IST

New Delhi [India], Jan 16 (ANI): Defence Minister Nirmala Sitharaman on Wednesday praised the Border Road Organisation (BRO) for constructing an important portion of the Kailash Manasarovar route near Nepal border in Uttarakhand.

BRO is engaged in the construction of Kailash Mansarovar Yatra route wherein portion between Tawaghat to Lipulekh pass via Ghatiabagarh forms an important constituent.

"A very crucial milestone has been achieved on Jan 15, 2019, by connecting Lakhanpur to Najang by BRO. This connectivity is very important being chicken neck corridor with Nepal in Dharchula Sub- Division of Uttarakhand, where the only alternative route was a mule track passing below the new road alignment," the Defence Minister tweeted.

The road connectivity to Najang will ensure unhindered access to civil population residing in Malpa, Lamari, Buddhi, Chiyalekh, Garbhadhar, Gunji, Kutti and Nabhidang villages in Pithoragarh district of Uttarakhand, Sitharaman said.

This will also provide round the clock connectivity to the Indian troops deployed in Vyas valley on the China border, she added.

The task is entrusted to the Project Hirak of the Border Roads Organisation. (ANI)

NEWSJIZZ

BRO builds 2.5 km long Lakhanpur-Najang high road on the Indo-Nepal border

JANUARY 16, 2019

Dehradun: The Border Road Organisation (BRO) accomplished one of the rare feats by completing a crucial 2.5 km long stretch connecting Lakhanpur to Najang, which lies at the Kailash Mansarover route near Lipulekh pass on international borer along Nepal in Pithoragarh district.

The stretch is part of the Kailash-Mansarovar Yatra circuit, which the BRO is planning to complete it by December, 2020.

The stretch, which is over 2400 metres in height, is considered to be one of the most difficult projects to complete.

It took 10 years to construct the stretch, and BRO engineers have admitted that the narrow track and terrain acted as the biggest challenges to construct the road.

Acknowledging the achievement, Defence minister, Nirmala Sitharaman tweeted that the road connectivity to Najang will ensure accesses to people of Malpa, Lamari, Buddhi, Chiyalekh, Garbhadhar, and Nabhidang in Pithoragarh district.

““To all men, officers & the DG Border Roads Organisation congratulations & well done on Project Hirak. #BRO is engaged in the construction of Kailash Mansarovar Yatra route. Portion between Tawaghat-Lipulekh pass via Ghatiabagarh is an important constituent,” she tweeted.

“A very crucial milestone has been achieved on 15 Jan 2019 by connecting Lakhanpur to Najang by BRO. This connectivity is in Dharchula Sub- Division of Uttarakhand, where the only alternative route was a mule track passing below the new road alignment,” she said.

“This will provide round-the-clock connectivity to our troops in Vyas valley,” the tweet added.

A senior official in the BRO said that for Army to reach Najang area before the project commenced was nothing short of a ‘logistic nightmare’, as the route from the India side was inaccessible and taking the Nepal route was not feasible.

“It used to take five hours for a porter to reach Najang using the bridges at the border, but now it is only a five-minute drive to Najang. For our Army personnel, it is very important,” the official said.

The Lakhanpur-Najang stretch is the lifeline of the entire region since it falls on the Mansarovar Yatra route.

“The difficulty the project has been can be gauged from the fact that machines worth Rs 3 crore were damaged due to the terrain and ten labour causalities were recorded,” the BRO officer said.

Outlook
THE NEWS SCROLL

BRO connects crucial road links on Kailash Mansarovar route

New Delhi, Jan 16

The BRO, which is constructing the Tawaghat-Ghatiabagarh-Lipulekh axis in Uttarakhand, an important part of the Kailash-Mansarovar Yatra route, has connected Lakhanpur to Najang, Defence Ministry officials said.

The crucial development will also provide round-the-clock connectivity to troops deployed in Vyas valley, a ministry official said.

A Defence Ministry statement said the road upto Lakhanpur from Tawaghat measuring 23 km has already been connected.

Similarly, the road beyond Budhi village upto Lipulekh pass is 51 km long has also been connected.

At present, the Border Roads Organisation, under project Hirak, is engaged in constructing a road between Lakhanpur to Budhi in a 16.5 km-stretch, which passes through a rugged and inaccessible terrain.

"Chief Engineer, Project Hirak, Vimal Goswami has confirmed that the BRO has connected Lakhanpur to Najang on January 15. This stretch is of 2.5 km length and the BRO has been able to connect Najang to the mainland despite all odds," the statement said.

This portion of road assumes prime significance since the road alignment intersects a mule track and it has been a main issue of concern for the state government in order to provide passage to locals residing in upper reaches, traders and migrants.

"This connectivity is very important, being chicken neck corridor with Nepal in Dharchula sub-division, where the only alternative route was a mule track passing below the new road alignment," it said.

"The road connectivity to Najang will ensure unhindered access to civil population residing in Malpa, Lamari, Buddhi, Chiyalekh, Garbhadhar, Gunji, Kutti and Nabhidang villages in Pithoragarh district of Uttarakhand," the statement said.

दैनिक जागरण
पिथौरागढ़/
16 जनवरी 2019

चीन सीमा तक बन रही सड़क की सबसे बड़ी बाधा हुई दूर

नजंग के मध्य तीन किमी सड़क तैयार, चट्टानों का सीना चीरने में लग गए तेरह वर्ष

पॉजिटिव न्यूज

संवाद सूत्र, धारचूला : गर्बाधार से चीन सीमा लिपूलेख तक बन रही सड़क की सबसे बड़ी बाधा बीआरओ ने पार कर दी है। अजेय माने जाने वाले लखनपुर से नंजग के मध्य की चट्टानों का सीना चीर कर तीन किमी सड़क तैयार हो गई है। लखनपुर से नजंग तक वाहन पास हो चुका है। अब नजंग से मालपा लामारी के मध्य सड़क बनते ही चीन सीमा तक वाहन चलने लगेंगे।

गर्बाधार ने लिपूलेख तक सड़क निर्माण का कार्य वर्ष 2006 से प्रारंभ हो गया था। सड़क निर्माण का कार्य सीमा सड़क संगठन के जिम्मे था। सड़क का निर्माण गर्बाधार से आगे होना था। गर्बाधार से बड़ी सात साल में ढाई से तीन किमी सड़क बना कर बीआरओ लखनपुर तक पहुंचा तो लखनपुर की चट्टानों के आगे बीआरओ की नहीं चली । लखनपुर से आगे की चट्टानों को काट कर आगे नहीं बढ़ पाने पर मार्ग निर्माण का कार्य उच्च हिमालय में

नजंग व लखनपुर क्षेत्र में इन चट्टानों को काटकर बन रही है चीन सीमा तक सड़क ●

प्रारंभ किया गया। हैलीकॉप्टर से गुंजी में जेसीबी, पोकलैंड पहुंचा कर सड़क निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ । उच्च हिमालय में पुलों का निर्माण करने के साथ ही बीआरओ ने गर्ब्यांग से अंतिम भारतीय पड़ाव नाबीढांग तक सड़क का निर्माण कर दिया।

लखनपुर से नंजग , मालपा होते हुए बूंदी तक सड़क निर्माण का कार्य एक निजी ठेकेदार कंपनी को दिया गया। निजी कंपनी को भी लखनपुर से नजंग के मध्य तीन किमी सड़क बनाने में दो साल से अधिक लग गए । सड़क निर्माण के दौरान हुए भूस्खलन के चलते पैदल मार्ग भी ध्वस्त होने से बीते वर्ष कैलास मानसरोवर यात्रा को पिथौरागढ़ से गुंजी तक हैलीकाप्टर से संचालित करनी पड़ी। स्थानीय ग्रामीणों के माइग्रेशन के लिए लखनपुर और नजंग के के पास काली नदी में अस्थाई पुल बना कर आवाजाही करनी पड़ी। लखनपुर , नजंग के आगे पस्त हो चुके बीआरओ के माध्यम से तीन किमी चट्टान काट कर मंगलवार को सड़क बन चुकी है। जो 76 किमी लंबे मार्ग की सबसे बड़ी बाधा थी।

सामरिक दृष्टि से चीन सीमा तक बन रही इस सड़क में अब नजंग से लामारी तक की बाधा दूर करनी है। लगभग पांच किमी इस क्षेत्र में कुछ हिस्से में सड़क बनी है और बीच -बीच में बननी है। यदि इसी गति से सड़क का कार्य चलता है तो इस वर्ष की कैलास मानसरोवर यात्रा के यात्री दिल्ली से चीन सीमा तक का सफर वाहन से कर सकेंगे। वहीं भारत चीन व्यापार के व्यापारी भी वाहनों से सामान लेकर जा सकेंगे । बीआरओ से मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार को लखनपुर से नजंग के मध्य वाहन पास कराया गया है। यहां पर सड़क बनने से क्षेत्र के लोगों सहित बीआरओ, निजी कंपनी के कर्मियों ने खुशी जताई है।